AN INTERNATIONAL CONFERENCE ON
Humanities, Science & Research
At Asha Girls College, Panihar chack, Hisar (Haryana)
27-28th January, 2024

कुपोषणः स्थिति का एक वर्णनात्मक अध्ययन

Sumitra Kumari[1], Dr. Satish Kumar Singh[2]
[1]Research Scholar, Department of Education, Capital University, Chitragupt Nagar, Jhumri Telaiya, Koderma, Jharkhand
[2]Research Supervisor, Department of Education, Capital University, Chitragupt Nagar, Jhumri Telaiya, Koderma, Jharkhand

सार

मलन्यूट्रिशन एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या है जो विभिन्न आयु और विभिन्न लोकतंत्रों के लोगों को प्रभावित करती है। इस काम में, मलन्यूट्रिशन का विवरणात्मक विश्लेषण पेश किया जाता है ताकि मलन्यूट्रिशन के बहुआयामित्व को स्पष्ट किया जा सके, साथ ही इसके परिणामों को। अध्ययन में मलन्यूट्रिशन की प्रसार और इसमें योगदान देने वाले जोखिम कारकों का परीक्षण किया गया है, और उसके परिणामों का भी। यह साक्षात्कारी डेटा, वर्तमान साहित्य, और नैदानिक अवलोकन का एक ध्यानपूर्वक समीक्षा करके किया गया है। इसके अतिरिक्त, यह इस घातक संबंध का अन्वेषण करता है जो स्वास्थ्य देखभाल में असमानता, सामाजिक–आर्थिक परिप्रेक्ष्य, और आहारी अपर्याप्तियों के बीच मौजूद है, जो सभी उन कारकों में से हैं जो मलन्यूट्रिशन के प्रकोप में योगदान करते हैं। इसके अलावा, शोध विभिन्न प्रकार के मलन्यूट्रिशन, जैसे कि अथकन, अधिकन आहार, और लघुपोषक तत्वों के लिए वैद्यकीय प्रकटन और नैदानिक मानकों का संबंध कैसे है, इसे जांचता है। यह शोध वैश्विक स्तर पर मलन्यूट्रिशन को संबोधित करने और पोषणीय परिणामों को सुधारने के लक्ष्य से टारगेटेड इंटरवेंशन, नीति निर्माण, और सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यों को सुधारने का उद्देश्य रखता है। इससे मलन्यूट्रिशन को एक जटिल और बहुआयामी स्वास्थ्य समस्या के रूप में एक विवेकशील ज्ञान प्राप्त होगा।

मूल शब्द–ʿ कुपोषण, सार्वजनिक स्वास्थ्य, वर्णनात्मक विश्लेषण, व्यापकता, जोखिम कारक, परिणाम, स्वास्थ्य देखभाल में असमानताएं

प्रस्तावना

हर बच्चा अपनी खुद की गति और अपनी समय पर विभिन्न विकासात्मक चरणों के माध्यम से विकसित होता है। बच्चों का विकास और वृद्धि रूपांतरित प्रक्रियाएँ नहीं होतींय बल्कि उनकी आसपास की परिस्थितियों, उनके आहार, और उनके माता–पिता के पोषण से प्रभावित होती हैं। ये तत्व एक छोटे बच्चे के लिए सबसे आवश्यक होते हैं ताकि बच्चा संभवतः सर्वोत्तम स्थिति तक विकसित हो सके। हाल के आंकड़े सुझाव देते हैं कि बच्चे की स्वास्थ्य उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त करने की क्षमता उनके आहार पर बहुत अधिक निर्भर करती है, विशेष रूप से उनके प्रारंभिक वर्षों में। बच्चों की पोषण स्थिति को एक समुदाय की समग्र स्वास्थ्य के लिए एक विश्वसनीय विकल्प के रूप में सोचा जा सकता है। मानव शारीरिक मापांकन, जैसे कि आयु या ऊँचाई के अनुपात में वजन, आम तौर पर बच्चे की पोषण स्थिति को चित्रित करने के लिए प्रयोग किया जाता है क्योंकि यह बच्चे के कम वजन या व्यर्थता की गुणवत्ता को सूचित करता है। जीवन के लिए प्रमुख आवश्यकता खाना है, एक बच्चे को बड़ा और विकसित होने के लिए पर्याप्त खाद्य चाहिए, और बिना इसके जीवन मौजूद नहीं हो सकता।

1. विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, प्रथम छह महीने के दौरान नवजात शिशु के स्वस्थ विकास और वृद्धि के लिए आवश्यक सभी पोषक तत्व मां का दूध प्रदान करता है। संयुक्त राष्ट्र बाल आपातकालीन कोष (यूनिसेफ) के अनुसार, उन नवजात शिशुओं की तुलना में जो माँ के दूध से नहीं दुधारित होते हैं, उनमें जीवन बचाने की छः गुणा अधिक संभावना होती है।
2. अगर किसी बच्चे को अच्छा नहीं लग रहा है और वह उस खाद्य को ठीक से प्रयोग नहीं कर सकता, या अगर उनका आहार विकास और रखरखाव के लिए पोषक तत्वों का पर्याप्त मात्रा में नहीं है, तो वह कुपोषित होता है (कम पोषण)।

➢ **परिचालनात्मक परिभाषा**

पोषणहीनताः इस अध्ययन के अनुसार, पोषणहीनता बच्चों की आदर्श स्वास्थ्य को बनाए रखने की असमर्थता है जो मात्रा और गुणवत्ता दोनों के संदर्भ में अपर्याप्त खाद्य सेवन के कारण होती है। पोषणहीनता कई विभिन्न रूपों में हो सकती है, जैसे कि माइक्रोन्यूट्रिएंट की कमी, अंथर्नयूट्रिशन, और ओवरवेटध्मोटापा। जब बच्चे महत्वपूर्ण पोषक तत्वों की कमी का सामना करते हैंकृजैसे कि प्रोटीन, विटामिन, और खनिजकृतो वे अपोषण में पड़ जाते हैं, जो व्यर्थता, रूखा पनीर, और कुछ माइक्रोन्यूट्रिएंटों की कमी का कारण बन सकता है। दूसरी ओर, ऊर्जा में अधिक लेकिन पोषक तत्वों में कमी का आहार ओवरवेट या मोटापा का कारण बन सकता है, जो डायबिटीज और हृदयरोग जैसी स्थितियों का कारण बन सकता है। इस दृष्टि से, पोषणहीनता एक जटिल समस्या है जिसमें बच्चों की सामान्य स्वास्थ्य की संरक्षा के लिए खाद्य की मात्रा और गुणवत्ता का ध्यान देना आवश्यक होता है।

ज्ञानः इस अध्ययन में ष्ज्ञानष शब्द उन पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों की माताओं के पास कम पोषण के बारे में जागरूकता और समझ का स्तर दर्शाता है। इसमें उनकी पोषणहीनता के मूल, प्रभाव, और रोकथाम के बारे में समझ शामिल है। पर्याप्त जानकारी के साथ, माताएं अपने बच्चों के पोषण, चिकित्सा सेवा, और सामान्य कल्याण के बारे में बुद्धिमत्ता से निर्णय ले सकती हैं। यह परिवारों को पोषणहीनता के चेतावनी संकेतों को पहचानने, सही चिकित्सा सेवा प्राप्त करने, और अपने बच्चों के स्वास्थ्य पर इसके नकारात्मक प्रभाव को कम करने के लिए पूर्वनिर्धारित कार्रवाई लेने की क्षमता प्रदान करता है। माताओं के ज्ञान को महत्वपूर्ण मानकर, ज्ञान की कमी को भरने और बच्चों के लिए सर्वोत्तम पोषण और स्वास्थ्य का समर्थन करने वाले ध्यानसंचारी शैक्षणिक हस्तक्षेप प्रदान करने के लिए माताओं के ज्ञान का मूल्यांकन करना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

रवैयाः इस अध्ययन में, ष्रवैयाष उन विश्वासों, भावनाओं या विचारों को संदर्भित करता है जो पांच साल से कम उम्र के बच्चों की माताओं में कुपोषण के बारे में हैं। इसमें कुपोषण के बारे में उनके सभी विचार, भावनाएं और राय शामिल हैं

और यह उनके बच्चों के स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित करता है। स्तनपान, पोषण संबंधी विविधता और स्वच्छता की आदतों और व्यवहार संशोधन जैसी स्वस्थ प्रथाओं को अपनाने से पोषण और स्वास्थ्य संवर्धन के बारे में सकारात्मक दृष्टिकोण को सुगम बनाया जा सकता है। इसके विपरीत, कुपोषण से प्रभावी ढंग से लड़ने की माताओं की कोशिशें प्रतिकूल दृष्टिकोण या मान्यताओं के कारण बाधित हो सकती हैं। कुपोषण के संबंध में माताओं के दृष्टिकोण को समझना उन उपचारों को अनुकूलित करने में महत्वपूर्ण है जो बाधाओं को लक्षित करते हैं और आदर्श बाल पोषण और स्वास्थ्य परिणामों को बढ़ावा देने के लिए समर्थकों का उपयोग करते हैं। यह विधायकों और स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों के लिए संदर्भ–विशिष्ट, सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक तरीकों को बनाना संभव बनाता है जो माताओं के मूल्यों और विश्वासों के साथ संरेखित होते हैं, जो अंततः पांच साल से कम उम्र के बच्चों में कुपोषण को रोकने के लिए उपचार की प्रभावकारिता को बढ़ाता है।

- **मान्यताओं**

शोधकर्ता का मानना है कि,

✓ पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों वाले माता–पिता को कुपोषण के बारे में थोड़ा पता होगा।
✓ पांच साल से कम उम्र के बच्चों के माता–पिता कुपोषण को सकारात्मक रूप से देखेंगे।
✓ पांच साल से कम उम्र के बच्चों के माता–पिता को इस बारे में थोड़ा पता होगा कि उनके बच्चों के लिए स्वस्थ आहार क्या है।
✓ बच्चों के माता–पिता कुपोषण के प्रति अपनी समझ और दृष्टिकोण पर सटीक डेटा प्रदान करके सहयोग करना जारी रखेंगे।

सीमाएँ

✓ पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चों वाले रेवाडी जिले के समुदाय में केवल 50 माताएँ और पिता हैं।
✓ डेटा एकत्र करने के लिए केवल 4–5 सप्ताह आवंटित किए जाते हैं।
✓ डाटा संग्रहण क्षेत्र में केवल रेवाडी जिला ही शामिल है।
✓ डेटा प्राप्त करने के लिए प्रयुक्त दृष्टिकोण साक्षात्कार है।

➢ **अध्ययन की आवश्यकता**

हरियाणा में पोषणहीनता अब भी एक गंभीर मुद्दा है, खासकर पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए, जिनमें से लगभग दो तिहाई इससे पीड़ित होते हैं। इस आवंटित जनसंख्या का लगभग 5–8ः को गंभीर रूप से पोषणहीन माना जाता है, जिसमें अधिकांश हल्के या मध्यम पोषणहीनता श्रेणी में आते हैं। यह बच्चों के स्वास्थ्य को पूरे राज्य में प्रभावित करने वाली एक व्यापक समस्या का संकेत देता है। हरियाणा की आधे से अधिक जनसंख्या ग्रामीण हैकृराज्य की कुल जनसंख्या का लगभग 75ः ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है। यह चिंताजनक है कि लगभग 50ः हरियाणा की ग्रामीण जनसंख्या गरीब है और इससे प्रमुख रूप से राज्य की गंभीर सामाजिक–आर्थिक समस्याओं का संकेत मिलता है। यह गरीबी, कम प्रति व्यक्ति आय के साथ, कई बच्चों को पर्याप्त भोजन प्राप्त करना और अधिक मुश्किल बनाती है। हरियाणा के बच्चे प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा, बुरी स्वच्छता, और संक्रमणों की उच्च प्रसार के कारण शारीरिक या मानसिक विकास नहीं कर रहे हैं। इन जटिल समस्याओं का समाधान करने के लिए हरियाणा की जनता की विशेष आवश्यकताओं के लिए उपयुक्त रूप से समस्याओं को सुधारने के लिए समाजवादी योजनाओं, स्वास्थ्य सुविधाओं, और पोषण सहायता प्रणालियों का विकास के लिए संयुक्त प्रयास की आवश्यकता है।

➢ **समस्या का विवरण**

हालांकि हरियाणा राज्य में पोषणहीनता के सभी पहलुओं पर ज्ञान की कमी है, लेकिन यह अब भी एक प्रमुख सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या है। पोषणहीनता को निपटाने के प्रयासों के बावजूद, हरियाणा के लिए अद्यतित, क्षेत्रीय डेटा की कमी के कारण कार्यकारी नीति और हस्तक्षेप योजनाओं का विकास कठिन हो जाता है। इसके अतिरिक्त, हरियाणा में पोषणहीनता के योगदान करने वाले विशेष सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक, और पर्यावरणीय तत्वों को अक्सर राष्ट्रीय या क्षेत्रीय प्रवृत्तियों के पक्ष में उपलब्ध शोध के लिए अनदेखा किया जाता है। इसलिए, हरियाणा में पोषणहीनता के घातक प्रभाव, कारण, और परिणामों का विस्तृत अध्ययन बेहद आवश्यक है। यह अध्ययन संकुचित हस्तक्षेपों और नीति पहलों के लिए महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करेगा जो राज्य की जनता के पोषण स्थिति और सामान्य कल्याण को बढ़ावा देने के लक्ष्य के संरेखित हैं, खासकर महिलाओं और बच्चों जैसे संवेदनशील गुटों के बीच।

अध्ययन का उद्देश्य

- पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों के माता–पिता की कुपोषण के बारे में समझ का आकलन करना।
- यह जानने के लिए कि पांच साल से कम उम्र के बच्चों के माता–पिता भुखमरी के बारे में कैसा महसूस करते हैं।
- कुपोषण के बारे में पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चों के माता–पिता के दृष्टिकोण और ज्ञान की तुलना करना।
- पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों के माता–पिता के बीच संबंध और कुछ जनसांख्यिकीय विशेषताओं और कुपोषण के बारे में उनके ज्ञान और दृष्टिकोण का निर्धारण करना।

साहित्य की समीक्षा

करावेंन एट अल. (2018) ने जांचा कि समुदायों में रहने वाले वृद्ध व्यक्तियों को अपने शारीरिक वजन, पोषणहीनता के लक्षण, और सूचना स्रोत कैसे देखते हैं। साहित्य मूल्यांकन शायद पिछले अध्ययनों को शामिल करता है जो वृद्ध व्यक्तियों की मालनुत्रिता और शारीरिक वजन के बारे में उनके धारणाओं और विश्वासों को, साथ ही उनके पोषण ज्ञान और

अभ्यासों को प्रभावित करने वाले परिवर्तनात्मक कारकों को कैसे प्रभावित करते हैं। इसमें वृद्ध व्यक्तियों में पोषणहीनता की प्रसार और प्रभावों पर ध्यान दिया गया हो सकता है, जिसमें उनकी दृष्टिकोण को समझना कितना महत्वपूर्ण है ताकि पोषणहीनता के लिए प्रभावी हस्तक्षेपों और परिणाम प्राप्त किया जा सके। इसके अलावा, समीक्षा संभावना है कि वृद्ध व्यक्तियों के लिए पोषण सूचना के स्रोतों के रूप में मीडिया, सामाजिक नेटवर्क, स्वास्थ्य सेवा प्रदाता, और अन्य स्रोतों पर पूर्ववत अनुसंधान किया गया होगा। इसके अतिरिक्त, यह संदर्भ में साहित्य के गड्ढों को और इस जनसंख्या के भोजन आवश्यकताओं और कठिनाइयों को संबोधित करने के लिए विशेषज्ञ तरीकों की आवश्यकता को ध्यान में रखता है। समग्र रूप से, साहित्य समीक्षा संभवतः अध्ययन के उद्देश्यों और मार्गदर्शिका को एक ठोस आधार प्रदान करती है, सर्वेक्षण डेटा की जांच और परिणामों के विवेचन को वृद्ध व्यक्तियों के मालनुत्रिता और शारीरिक वजन के बारे में धारणाओं के प्रकार के आलोक में गाइड करती है।

वोंग वेगा एट अल. (2019) ने अस्पताल में भर्ती बच्चों में पोषणहीनता के महत्वपूर्ण समस्या की जांच की, जिसमें पोषणहीनता से संबंधित विशेषताओं की जानकारी शामिल है और एक पेडियाट्रिक जोखिम मूल्यांकन उपकरण के निर्माण की सिफारिश की। साहित्य अध्ययन शायद पिछले अध्ययनों को शामिल किया होगा जो बच्चों में पोषणहीनता पर थे, जिसमें अस्पतालों में भर्ती होने वाले बच्चों में पोषणहीनता की प्रसार, योगदानकारक कारक, और पोषणहीनता के परिणामों पर ध्यान केंद्रित था। यह बताया जा सकता है कि चिकित्सा सेटिंग में पोषणहीनता का निदान और उसका इलाज कितना कठिन होता है और किस प्रकार से महत्वपूर्ण है कि नकारात्मक परिणामों को रोकने के लिए समय पर पहचान और कार्रवाई करना। मूल्यांकन ने शायद पहले ही कोशिशों की जांच की होगी कि बच्चों में पोषणहीनता के लिए जोखिम मूल्यांकन उपकरण बनाने के लिए, उनके लाभ, नुकसान, और उनका क्लिनिकल सेटिंग में उपयोग के लिए उपयुक्तता की विश्लेषण। इसके अलावा, यह समीक्षा साहित्य के गड्ढों को और अस्पताल में भर्ती बच्चों में पोषणहीनता के जोखिम का मूल्यांकन करने के लिए अधिक संपूर्ण और समान तरीकों की आवश्यकता को शामिल कर सकती है। समग्र रूप से, साहित्य समीक्षा जानकारी के उपलब्ध शोध के एक संग्रह का एक व्यापक सारांश प्रदान कर सकती है, जो पेडियाट्रिक हेल्थकेयर में इस महत्वपूर्ण समस्या को समाधान करने के लिए किए गए अध्ययन के तर्क और लक्ष्यों को मार्गदर्शित करता है।

फैक्सेन–इरविंग एट अल (2021) ने नर्सिंग होम के मरीजों में कमजोरी, सार्कोपीनिया, और पोषणहीनता के बीच संबंध की संभावना की जाँच की। साहित्य समीक्षा शायद पिछले अध्ययनों पर एक–एक अवस्था के लिए और जाँच की होगी कि ये वृद्ध वयस्क समूह, खासकर संस्थागत सेटिंग में रहने वाले, एक–दूसरे के साथ कैसे प्रभावित होते हैं। यह सार्कोपीनिया, कमजोरी, और पोषणहीनता की आवाज के फर्कों का प्रस्तुतिकरण शायद किया हो, साथ ही नर्सिंग होम के मरीजों में इन संदर्भों के आम रिस्क फैक्टर और इन विकारों के आधारभूत तंत्रों की जांच की हो। इस जनसंख्या की जटिल स्वास्थ्य आवश्यकताओं को पूरी तरह से संबोधित करने के लिए, अध्ययन में सार्कोपीनिया, कमजोरी, और पोषणहीनता का मूल्यांकन और उपचार के पिछले अध्ययनों की जाँच शामिल हो सकती है। यह साहित्य समीक्षा संभवतः अध्ययन के लक्ष्यों और उपायों के लिए आधार प्रदान करती है, डेटा विश्लेषण का मार्गदर्शन करती है और परिणामों के व्याख्यान करती है कि संस्थानों में रहने वाले वृद्धों के बीच आपसी संबंधों का मुद्दा कैसे है।

अनुसंधान क्रियाविधि

➢ अनुसंधान उपागम

हरियाणा में पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों के माता–पिता के बारे में पोषणहीनता के बारे में ज्ञान और धारणाओं को निर्धारित करने के लिए, इस अध्ययन में एक वर्णात्मक सर्वेक्षण दृष्टिकोण का उपयोग किया गया। इस विधि में डेटा को एकत्र करना, मूल्यांकन करना, और विधिवत विवेचन करना शामिल होता है ताकि किसी जनसंख्या या प्रक्रिया को वर्णात्मक रूप से चित्रित किया जा सके। वर्णात्मक सर्वेक्षण दृष्टिकोण का उपयोग करके अध्येता माता–पिता के पोषणहीनता के बारे में धारणाओं और ज्ञान के बारे में अधिक जान सकते हैं, जो माता–पिता के पोषण समस्या के प्रति उनके धारणाओं और समझ को बताता है।

➢ अनुसंधान डिजाइन

इस अध्ययन के लक्ष्यों और प्रकृति को ध्यान में रखते हुए, हरियाणा में पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों के माता–पिता के पोषणहीनता के प्रति ज्ञान और धारणाओं का मूल्यांकन करने के लिए एक अनुप्रयोगी दृष्टिकोण को उचित माना गया। अनुप्रयोगी डिजाइन उस तत्वों को निगरानी और वर्णन करने पर ध्यान केंद्रित करता है जैसे कि वे स्वाभाविक रूप से होते हैं, अभ्यासों के बदलाव की आवश्यकता नहीं होती, जबकि प्रयोगात्मक डिजाइन में चरण और नियंत्रण समूह को बदलने की आवश्यकता होती है। इस अध्ययन का अनुप्रयोगी डिजाइन अनुसंधानकर्ताओं को माता–पिता के पोषणहीनता के प्रति धारणाओं और ज्ञान के बारे में डेटा एकत्र करने की अनुमति देता है बिना उनके अनुभव या व्यवहार को बदलने की।

➢ सेटिंग

डेटा संग्रह के वास्तविक स्थान और परिस्थितियों को संदर्भ कहा जाता है। हरियाणा के पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों के माता–पिता के पोषणहीनता पर इस अध्ययन के लिए अनुसंधान कई राज्य के शहरों और गाँवों में किया गया। इस अध्ययन में खास रूप से हरियाणा के रेवाड़ी जिले में बेरली कलां का अध्ययन किया गया। अध्ययन के परिणामों को संदर्भीकृत करना और पर्यावरणीय कारकों का पालन करना कि कैसे माता–पिता के पोषणहीनता के बारे में धारणाओं और ज्ञान को प्रभावित कर सकता है, सेटिंग के जागरूकता की आवश्यकता होती है।

➢ जनसंख्या

अध्ययन की आबादी में बेरली कलां, रेवाड़ी जिला, हरियाणा, के निवासियों को शामिल है जो पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों के माता–पिता हैं। मलन्यूत्रिता के बारे में धारणाओं और ज्ञान का मूल्यांकन करने के लिए लक्षित समूह इन माता–पिता हैं। पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों के माता–पिता को ध्यान में रखकर अध्ययन का केंद्र यहाँ रखा गया है ताकि नौजवान बच्चों के स्वास्थ्य और भलाई के लिए महत्वपूर्ण है उन लोगों की दृष्टिकोण संग्रहित किया जा सके। हरियाणा में मलन्यूत्रिता को सफलतापूर्वक संघर्षित करने के लिए, नीतियों और हस्तक्षेपों को इस समुदाय की विशेषताओं और दृष्टिकोणों को ध्यान में रखना चाहिए।

डेटा विश्लेषण

डेटा में भाग लेने वाले प्रतिभागियों के माता–पिता की जिम्मेदारियों का विवरण दिया गया है, जिसमें 45: पिता और 55: माताएँ खुद को पहचानते हैं। यह वितरण दिखाता है कि बच्चों के स्वास्थ्य और कल्याण से संबंधित समस्याओं का विश्लेषण करते समय माता और पिता दोनों के विचारों को महत्वपूर्ण ध्यान में रखना कितना अहम है। जब बात बच्चों को पालने की आती है, तो माताएँ इतिहास में देखा गया है कि उन्होंने लगभग सभी देखभाल प्रदान की है, जिसमें देखभाल, स्वास्थ्य देखभाल, और पोषण शामिल है। उनकी मुख्य भूमिका बच्चों के विकास और स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में उचित है, और यह साक्षात्कार के नमूना आबादी में उनकी भारी उपस्थिति में प्रकट होती है।

दूसरी ओर, पिता भी अपने परिवार की देखभाल और प्रदान में महत्वपूर्ण होते हैं, और वे अपने संतानों की कल्याण और देखभाल के संबंध में निर्णयों में भी भाग लेते हैं। यहाँ तक कि नमूना आबादी में माता और पिता दोनों शामिल हैं, इसलिए बच्चों के स्वास्थ्य समस्याओं जैसे कि पोषणहीनता के संदर्भ में माता–पिता के धारणाओं और क्रियाओं का एक समूर्ण चित्र प्राप्त किया जा सकता है। इसके अलावा, दोनों माता और पिता की भूमिका को मान्यता देना मलन्यूत्रिता को लक्ष्य बनाने और ऐसे समुदाय में बच्चों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए समर्थक और सफल कार्यक्रमों और नीतियों को बनाने के लिए महत्वपूर्ण है। समग्र रूप में, डेटा आबादी में मौजूद माता–पिता की भूमिकाओं की विविधता को उजागर करता है और बच्चों के स्वास्थ्य संबंधित मुद्दों, जैसे कि पोषणहीनता, को संबोधित करते समय दोनों माता और पिता के दृष्टिकोण को ध्यान में रखने की महत्वपूर्णता को स्पष्ट करता है।

तालिका 1 अभिभावक भूमिका वितरण

अभिभावक	आवृत्ति	प्रतिशत
माँ	220	55
पिता	180	45
कुल	**400**	**100**

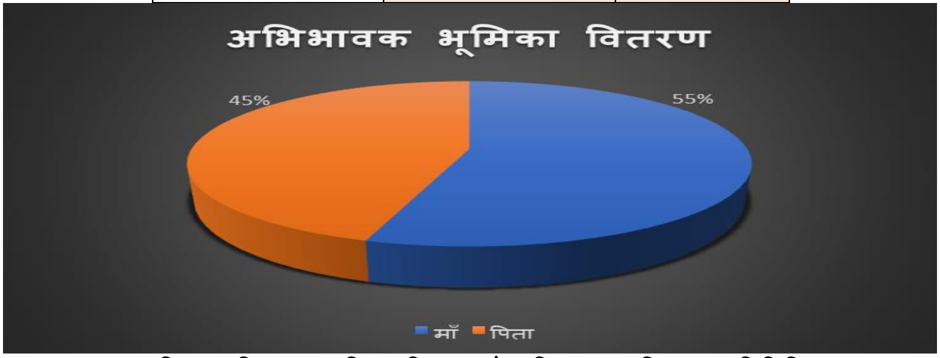

आकृति 1 अभिभावक भूमिका वितरण के प्रतिशत पर चित्रमय प्रतिनिधित्व

तालिका 2 आयु समूह वितरण

आयु	आवृत्ति	प्रतिशत
19 वर्ष और उससे कम	150	37.5
20–23 वर्ष	50	12.5
24 दृ 29 वर्ष	90	22.5
30 वर्ष और उससे अधिक	110	27.5
कुल	**400**	**100**

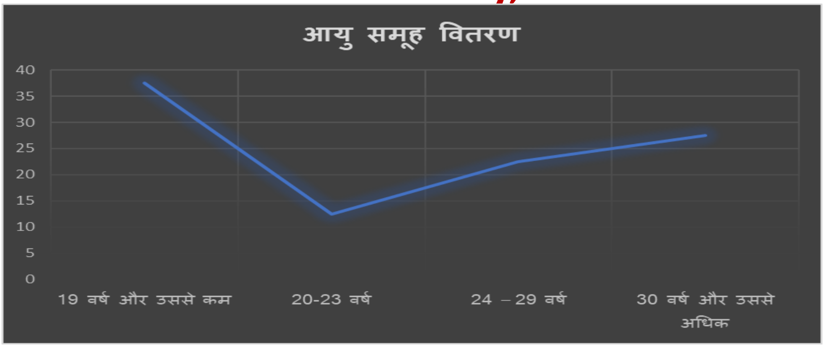

आकृति 2 आयु समूह वितरण के प्रतिशत पर चित्रमय प्रतिनिधित्व

जानकारी दिखाती है कि प्रतिभागियों के आयु समूह कैसे वितरित हैं, जिसमें विभिन्न आयु सीमाओं में विविध प्रतिनिधित्व है। प्रतिभागियों का बड़ा हिस्सा–37.5%–19 वर्ष या उससे कम आयु के हैं, जो इस नमूना आबादी में युवाओं का एक बड़ा प्रतिशत सुझाता है। इस वृद्धि में आबादी का संख्यात्मक बढ़ना युवा और युवतियों की जनसांख्यिकी पर एक संभावित अध्ययन केंद्र पर प्रकाश डालता है। साथ ही, प्रतिभागियों का एक महत्वपूर्ण विभाजन (27.5:) 30 वर्ष की आयु समूह या उससे अधिक में है, जो नमूना में वृद्ध वयस्कों को शामिल होने का सुझाव देता है। शेष व्यक्तियों, जो नमूना आबादी का 12.5% और 22.5% बनाते हैं, वे 20–23 और 24–29 वर्ष की आयु समूहों के बीच वितरित हैं। यह वितरण दिखाता है कि अनुसंधान आबादी के अंतर्निहित आयु समूह कितने विभिन्न हैं और डेटा की व्याख्या करते समय आयु को कितना महत्वपूर्ण है। प्रतिभागियों की आयु वितरण को समझना उन्हें परिणामों को संदर्भित करने और अनुसंधान विषय–इस मामले में, विभिन्न आयु समूहों के बीच पोषणहीनता के बारे में किसी भी आयु–विशेष पैटर्न या प्रवृत्तियों का पता लगानेकृमें कितना महत्वपूर्ण है।

तालिका 3 आवासीय क्षेत्र वितरण

क्षेत्र	आवृत्ति	प्रतिशत
ग्रामीण	310	77.5
शहरी	90	22.5
कुल	**400**	**100**

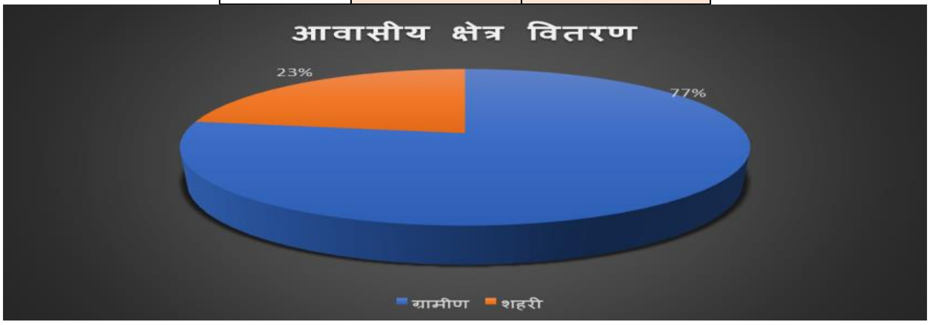

आकृति 3 आवासीय क्षेत्र वितरण के प्रतिशत पर चित्रमय प्रतिनिधित्व

डेटा निवास स्थानों के आधार पर ग्रामीण और शहरी परिवेशों को अलग करता है जिसके अनुसार भागीदार वितरण प्रस्तुत किया जाता है। नमूना आबादी में 400 प्रतिभागियों में से दो–तिहाई–77.5:—शहरी क्षेत्रों में रहते हैं, और शेषांक ग्रामीण क्षेत्रों में वितरित हैं। वितरण दिखाता है कि ग्रामीण व्यक्तियों ने अध्ययन आबादी का अधिकांश हिस्सा किया। ग्रामीण निवासियों की व्याख्या विशेष गुण, कठिनाइयाँ, और सामाजिक–आर्थिक सेटिंग्स को समझने के दौरान डेटा को ध्यान में रखना कितना महत्वपूर्ण है। प्रतिभागियों का ज्ञान, धारणाएँ, और व्यवहार जैसे मुद्दों के बारे में जैसे पोषणहीनता ग्रामीण और शहरी परिवेशों के बीच अलग हो सकते हैं क्योंकि सांस्कृतिक अभ्यास, संसाधन उपलब्धता, और स्वास्थ्य सेवा पहुंच जैसे कारकों के कारण। पोषणहीनता का इलाज करने और स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए निदेशन और नीतियों को संदर्भित बनाने और उन्हें लागू करने के लिए ग्रामीण और शहरी समूहों में यह गहरा समझना महत्वपूर्ण है।

तालिका 4 धार्मिक संबद्धता वितरण

धर्म	आवृत्ति	प्रतिशत
हिंदू	50	12.5
मुसलमान	140	35
जैन	120	30
ईसाई	80	20
अन्य	10	2.5
कुल	**400**	**100**

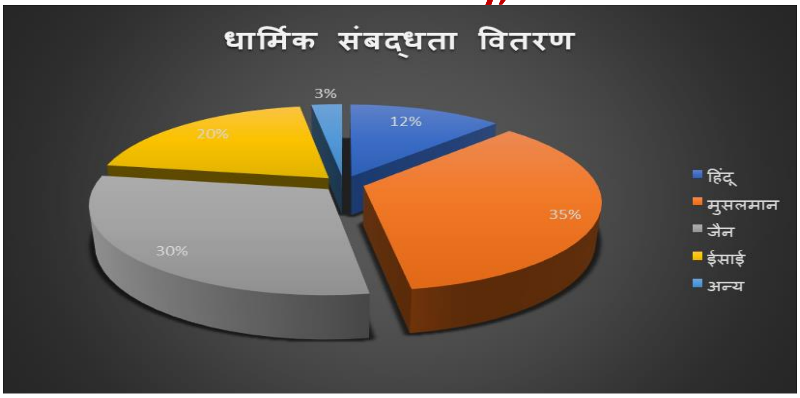

आकृति 4 धार्मिक संबद्धता वितरण के प्रतिशत पर चित्रमय पुनर्अभिविन्यास

वहाँ प्रस्तुत सांख्यिकियों द्वारा एक विशेष जनसांख्यिकी के अंतर्निहित धर्मिक परिचय का विवरण दिया गया है। 35: जनसंख्या के साथ, मुस्लिम सवाल किए गए लोगों का सबसे अधिक हिस्सा बनाते हैं, जिसे धीरे–धीरे 30: जैनों के अनुसरण किया जाता है। 20: जनसंख्या को ईसाई मनाते हैं, और हिन्दू 12.5: बनाते हैं। 2.5: लोग श्अन्यश श्रेणी में श्रेणीबद्ध किए जाते हैं, जो एक छोटी सी अल्पसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह डेटा इस्लाम और जैनिस्म के प्रमुखता को हिन्दूधर्म और ईसाई धर्म के साथ दिखाता है, सवालित समुदाय में धार्मिक विविधता के अन्दर अनुभवों के लिए अंदरूनी दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह संज्ञान में लाता है कि जनसंख्या की विविधता और बहुधर्मी नीति को दर्शाता है, समुदाय में धार्मिक गतिविधियों और विश्वासों की एक विस्तृत श्रृंखला को।

निष्कर्ष

हरियाणा की अध्ययन में बाल–पांच वर्ष के बच्चों के माता–पिता के पोषणहीनता पर ज्ञान और धारणाओं का मूल्यांकन करने के लिए एक वर्णनात्मक सर्वेक्षण दृष्टिकोण का उपयोग किया गया। यह दृष्टिकोण डेटा को एकत्र करने, विश्लेषण करने, और विधिवत आंकलन करने की संभावना बनाई, जिससे इच्छित दर्शकों के गुणों की अन्वेषणा हो सके। अपरीक्षणीय दृष्टिकोण का उपयोग प्रतिभागियों के अनुभवों द्वारा परिवर्तित न होने वाले घटनाओं की अवलोकन करने की संभावना दी। अध्ययन को हरियाणा के बेरली कला, रेवाड़ी जिले में आयोजित किया गया, जिसमें पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों के माता–पिता पर ध्यान केंद्रित किया गया।

जांच के परिणाम दिखाए कि माताओं का प्रतिशत 55: था, जिससे उनकी बच्चों को पालने में महत्वपूर्ण भूमिका को जोर दिया गया, जबकि पिताओं का प्रतिशत 45: था, जिससे बच्चों के स्वास्थ्य समस्याओं जैसे पोषणहीनता पर विचार करते समय दोनों माता–पिता के दृष्टिकोण को महत्वपूर्ण माना गया। आयु समूह वितरण एक विविध प्रतिस्थिति को दिखाता है, जिसमें 19 वर्ष या उससे कम आयु के कुछ युवा व्यक्ति शामिल हैं। इसके अलावा, अधिकांश प्रतिभागियों का ग्रामीण क्षेत्रों से होना, स्वास्थ्य सेवा उपचारों में ग्रामीण क्षेत्रों की विशेष समस्याओं को संबोधित करने की महत्वपूर्णता को हाइलाइट करता है। इसके अलावा, धार्मिक अनुपात डेटा ने जनसंख्या की बहुसांस्कृतिक और बहुधार्मिक संरचना को जोर दिया, मुस्लिम और जैन समुदायों को चीन और हिन्दुओं के साथ महत्वपूर्ण प्रतिशतों में बनाया। हरियाणा में पोषणहीनता का सामना करते समय और बच्चों के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में, अध्ययन ने सामाजिक–सांस्कृतिक पहलुओं, माता–पिता की भूमिका, और जनसांख्यिक विविधता को ध्यान में लेने वाले समग्र दृष्टिकोण की महत्वता को जोर दिया।

संदर्भ

- अबेट, एच.के., किडेन, एस.जेड., फेयेसा, वाई.एम., और गेब्रेहवारीट, ई.जी. (2019)। गंभीर कुपोषण से ग्रस्त बच्चों में मृत्यु दर। नैदानिक पोषण म्ैच्छ, 33, 98–104।
- क्रेवेन, डी.एल., लोवेल, जी.पी., पेली, एफ.ई., और इसेनरिंग, ई. (2018)। समुदाय में रहने वाले वृद्ध वयस्कों की शरीर के वजन, कुपोषण के लक्षण और सूचना के स्रोतों के बारे में धारणाएँरू सर्वेक्षण डेटा का एक वर्णनात्मक विश्लेषण। पोषण, स्वास्थ्य और उम्र बढ़ने का जर्नल, 22, 393–399।
- फैक्सेन–इरविंग, जी., लुइकिंग, वाई., ग्रोनस्टेड, एच., फ्रंजेन, ई., सीगर, ऊ., विकस्ट्रॉम, एस., ... और सेडरहोम, टी. (2021)। क्या नर्सिंग होम के निवासियों में कुपोषण, सरकोपीनिया और कमजोरी एक दूसरे से मिलती जुलती है? द जर्नल ऑफ फ्रैल्टी एंड एजिंग, 10, 17–21।
- गुएंटर, पी., अब्देलहादी, आर., एंथोनी, पी., ब्लैकमर, ए., मेलोन, ए., मिर्तलो, जे.एम., ... और रेसनिक, एच.ई. (2021)। अस्पताल में भर्ती मरीजों में कुपोषण का निदान और संबंधित परिणामरू संयुक्त राज्य अमेरिका, 2018। क्लिनिकल प्रैक्टिस में पोषण, 36(5), 957–969।
- हॉरवुड, सी., हास्किन्स, एल., अल्फर्स, एल., मसांगो–मुजिन्दुत्सी, जेड., डॉब्सन, आर., और रॉलिन्स, एन. (2019)। क्वाजुलु–नटाल, दक्षिण अफ्रीका में अनौपचारिक महिला श्रमिकों के बीच काम करने की स्थिति और बाल देखभाल प्रथाओं का पता लगाने के लिए एक वर्णनात्मक अध्ययनरू अनौपचारिक काम में माताओं के लिए बाल देखभाल का समर्थन करने के अवसरों की पहचान करना। बीएमसी बाल रोग विज्ञान, 19(1), 1–11।

- हुसैनी, एम., डार्बो, एम.के., मूर, एस.ई., नबवेरा, एच.एम., और प्रेंटिस, ए.एम. (2018)। बचपन के कुपोषण से बचने के लिए आवश्यक सामाजिक–आर्थिक और पर्यावरणीय परिस्थितियों की सीमाएँरू ग्रामीण गाम्बिया में एक प्राकृतिक प्रयोग। बीएमसी दवा, 16(1), 1–9.
- कुशितोर, एस.बी., ओवसु, एल., और कुशितोर, एम.के. (2020)। घाना में महिलाओं के बीच कुपोषण के दोहरे बोझ की व्यापकता और सहसंबंध। प्लस वन, 15(12), ई0244362।
- लियू, वाई., वू, एक्स., मा, वाई., ली, जेड., काओ, जे., जिओ, जे., ... और लिन, एफ. (2019)। स्थिर रोगियों के बीच दबाव की चोटों की व्यापकता, घटना और संबंधित कारकरू चीन में एक बहुकेंद्रीय, क्रॉस–अनुभागीय, खोजपूर्ण वर्णनात्मक अध्ययन। इंटरनेशनल वाउंड जर्नल, 16(2), 459–466।
- रिवाडेनेरा, एम.एफ., मोनकैयो, ए.एल., टेलो, बी., टोरेस, ए.एल., बुइट्रोन, जी.जे., एस्टुडिलो, एफ., ... और ग्रिजाल्वा, एम.जे. (2020)। इक्वाडोर में ग्रामीण तटीय बच्चों की आबादी में दीर्घकालिक कुपोषण और एनीमिया के लिए एक बहु–कारण मॉडल। मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य जर्नल, 24, 472–482।
- रॉबर्ट्स, एस., चाबॉयर, डब्ल्यू., और मार्शल, ए.पी. (2020)। अस्पताल के मरीजों की उनके पोषण देखभाल में भाग लेने के लिए प्रौद्योगिकी–आधारित हस्तक्षेप का उपयोग करने की धारणारू एक गुणात्मक वर्णनात्मक अध्ययन। नैदानिक पोषण म्ैच्छ, 39, 79–86।
- रॉबर्ट्स, एस., कोलिन्स, पी., और रैट्रे, एम. (2021)। समुदाय में कुपोषण, कमजोरी और सरकोपेनिया की पहचान करना और उसका प्रबंधन करनारू एक कथात्मक समीक्षा। पोषक तत्व, 13(7), 2316.
- रुइज, ए.जे., ब्यूट्रागो, जी., रोड्रिग्ज, एन., गोमेज, जी., सुलो, एस., गोमेज, सी., ... और अराक, सी. (2019)। अस्पताल में भर्ती मरीजों में कुपोषण से जुड़े नैदानिक और आर्थिक परिणाम। नैदानिक पोषण, 38(3), 1310–1316।
- ट्रटोवैक, डी., और ली, जे. (2018)। अस्पताल में कुपोषण की पहचान करने में प्रौद्योगिकी का उपयोगरू व्यापक समीक्षा। जेएमआईआर चिकित्सा सूचना विज्ञान, 6(1), ई4।
- वोंग वेगा, एम., बीयर, एस., जुआरेज, एम., और श्रीवत्स, पी. आर. (2019)। अस्पताल में भर्ती बच्चों में कुपोषण का जोखिमरू कुपोषण से संबंधित विशेषताओं का एक वर्णनात्मक अध्ययन और एक पायलट बाल चिकित्सा जोखिम–मूल्यांकन उपकरण का विकास। क्लिनिकल प्रेक्टिस में पोषण, 34(3), 406–413।

IJAEESM Quality Of Work... Never Ended...